आरती श्रीजगन्नाथ जी की

आरती श्री जगन्नाथ मंगलकारी,

चरणारविन्द आपदा हारी ।

निखरत मुखारविंद आपदा हारी,

कंचन धूप ध्यान ज्योत जगमगी।

अग्नि कुण्डल घृत पाव सरथरी । आरती..

देवन द्वारे धोवत ठाढ़ी,

मारकण्डे श्वेत गंग आन करी।

गरुड़ खम्भ सिंह पौर यात्री जुड़ी,

यात्री की भीड़ बहुत बेंत छड़ी। आरती.....

सुरनर मुनि थारे वेद उच्चारें....

धन्य-धन्य सुरश्याम आज घड़ी। आरती ..

www.totalbhakti.com